International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 1; Issue 5; September 2016; Page No. 20-24

डिण्डोरी जिले में हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता में सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

विवेकानन्द गुप्ता

शोधार्थी (शिक्षा), अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

शोधार्थी ने डिण्डोरी जिले में हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता में सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन किया। शोध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित पर्यावरण जागरुकता के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 56 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, जिला शिक्षा अधिकारी, 2–2 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 280 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया। शोध क्षेत्र के 78.57 प्रतिशत प्राचार्य, 62.50 प्रतिशत शिक्षक, 58.93 प्रतिशत अभिभावक व 83.21 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

मूलशब्द: डिण्डोरी जिला, हाई स्कूल, जनजातीय छात्र, पर्यावरण जागरुकता एवं सकारात्मक प्रभाव

प्रस्तावना

पर्यावरण से सम्बन्धित अनेकों प्रसंग तथा व्याख्यायें हमारे वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों में भरे पड़े हैं। प्राचीन ऋषि–मुनियों की पूरी दिनचर्या ही प्रकृति पर निर्भर थी। जहाँ अरण्यों में उपलब्ध सामग्रियों से ही उनके निवास–गृह कुटिया का निर्माण होता था, वहीं वनीय फल–फूलों पर उनका जीवन आधारित था। नदियों में स्नान होते थे तथा उन्हीं झुरमुटों के मध्य एकान्त स्थल पर वृक्षों के नीचे पूजा–पाठ तथा यज्ञादि क्रिया–कलाप होते थे। इन्हीं सघन वनों के गुरूकुल आश्रमों में शिष्य विद्या ग्रहण करते थे। इसी प्रसंग का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान राम के विषय में लिखा है कि – ''गुरू गृह पढ़न गये रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई।'' राजगृहों से राजपुत्रों को ब्रह्मचर्य व्रत के पालन तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए इन्हीं अरर्ण्य स्थित गुरूकुल आश्रम (पाठशालाओं) रूपी में भेज दिया जाता था। राजकुमार वेदों, पुराणों तथा धनुर्विद्या इत्यादि ज्ञान से सम्पन्न होकर इनसे निकलते थे। गुरूकुल आश्रम स्थित जीव–जन्तुओं, पेड़, फल–फूलों तथा गुरू के यज्ञादि कार्यों सम्बन्धी सम्पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते थे तथा एक योग्य ब्रह्मचर्य व्रतधारी को सम्पूर्ण ज्ञान से मंडित था, परिपूर्ण करके उन्हें गृहस्थ आश्रम के योग्य बनाकर ही अपने दायित्वों से मुक्त होते थे। प्राचीन काल में पर्यावरण में किसी भी प्रकार का असन्तुलन नहीं था क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरणीय तत्वों को देवता मानकर उनकी पूजा करता था हानि पहुँचाने को कौन कहे? प्रत्येक का तन–मन तथा धन से रक्षा करना नैतिक तथा धार्मिक कर्तव्य था। जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी, आकाश एवं विभिन्न वनीय वृक्षों को देव तुल्य स्थान प्राप्त था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इन तत्वों को विशेष स्थान देते हुए लिखा है कि – ''क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा'' ये ऐसे पाँच तत्व हैं जिससे सृष्टि का निर्माण होता है। इससे ही पर्यावरण विज्ञानियों ने बाद में 'पारिस्थितिकी' नाम दिया। डच मूल के भारतीय विद्वान फादर कामिल बुल्के ने अपने शोध–ग्रन्थ 'रामकथा उद्‌भव और विकास' में कहा है कि ''बाल्मीकि रामायण तो जैसे पर्यावरण की महागाथा ही है।''

वैदिक काल को अरण्य संस्कृति का स्वर्णकाल कहा जाता था, उन दिनों वन देवी 'अरण्यानी' की पूजा अनिवार्य थी। वन देवी 'प्रकृति' का पर्याय मानी जाती थी। वनों की विशेष महत्ता तथा सभ्यताओं का विकास भी इन्हीं के छाया तले हुआ था, ऐसा स्वीकार किया जाता है। भारतीय आर्य परम्परा तो सदैव इसकी पूजक रहीं है। अरण्य, तपोवन तथा कुंज क्रमशः ज्ञानस्थली, तपोस्थली तथा कर्मस्थली माने जाते थे। स्कन्द पुराण तथा कठोपनिषद् के प्रसंगानुसार 'पीपल' वृक्ष की जड़ में ब्रह्म, तने में विष्णु तथा टहनियों में शिव का वास होना माना जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी पीपल का वृक्ष औषधि गुण सम्पन्न तथा ग्रीष्मकाल में विशेष शीतलता प्रदायक माना गया है। इसकी छाया मोहक तथा अतुलनीय होती है। हमारे ऋषि–मुनियों ने इनकी गुण सम्पन्ता को स्वीकार करते हुये इसकी पूजा का विशेष विधान बनाया था, जो आज भी समाज में प्रचलित है। ऋग्वेद में सोम वृक्ष तथा अथर्ववेद में पलाश वृक्ष की पूजा का विधान है। 'माँ शीतला' को पलाश वृक्ष की देवी माना गया है।

विकास और प्रगति के नाम पर हमने प्रकृति और उसके निरन्तर चलते रहने वाले चक्र को गड़बड़ा दिया है और मानवकृत सुविधाओं के अहम् के आधार पर हम उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। सत्य यह है कि बिना अच्छे प्राकृतिक पर्यावरण के हम न तो सुखमय वर्तमान जी सकते हैं और न ही भविष्य की शान्तिप्रद आश्वस्तता सोच सकते हैं। यह ठीक है कि आज की वैज्ञानिक प्रगति और विकसित तथा विकासशील देशों की परस्पर आगे बढ़ने की होड़ में हर देश को विकास के पथ पर बढ़ना है, पर विकास को 'पर्यावरण के विनाश' के नाम पर तौलना भी उचित नहीं है। विनाश रहित विकास हमारा ध्येय और नारा होना चाहिए।

यह स्पष्ट है कि जब हम पर्यावरण प्रबन्ध की बात करते हैं तो हमें उसे पारिस्थितिकी के परिप्रेक्ष्य में ही सोचना चाहिए। फाहीमुद्दीन अहमद ने अपने लेख में लिखा है – ''विश्व के विकास के लिए तकनीकी प्रगति एक राष्ट्रीय आवश्यकता है, अतः उसे रोका नहीं जाना चाहिए, आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण का प्रबन्ध और उसकी योजनाएँ पारिस्थितिकी अवधारणाओं, तरीके और कार्य–प्रणालियों की समझ पर आधारित किसी भी देश में जनसंख्या विशेषज्ञ, जिन्हें सामान्यतया अंग्रेजी के प्रचलित नाम डेमोग्राफर्स के नाम से जाना जाता है, उस देश की घटती–बढ़ती जनसंख्या तथा

देश में उपलब्ध विभिन्न संसाधन, भौगोलिक स्थिति, लोगों का रहन–सहन और रीति–रिवाज के आधार पर यह आधिकारिक रूप से बताने में सक्षम होते हैं कि अगले वर्षो में इस देश की क्या स्थिति होगी? कौन–सी विपदायें या घटनायें आने वाली या घटित होने वाली हैं और उनका देशवासियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? उनका यह सामाजिक दायित्व होता है कि वे देश के शासन को सभी वस्तुस्थितियों से अवगत करा दें। निःसन्देह इस प्रकार के निर्णय में जनसंख्या की बहुत अधिक भूमिका होती है।''

हमारे देश में भी हाई स्कूल स्तर से असंतुलित होते हुए पर्यावरण के प्रति जागरुकता विकसित करने के लिए विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रम रखे गये है। उच्च स्तर पर इन पाठ्यक्रमों की विविधिता तथा प्रभावशीलता और अधिक बढ़ाई गई है। पर्यावरण प्रदूषण से लगातार गड़बड़ाते प्रकृति चक्र को संतुलित कर विरासत में सुंदर और व्यवस्थित भविष्य हेतु पर्यावरण प्रदूशण को नियंत्रित करना एवं प्राकृतिक संसाधनों का विशाल भंडार भी लगभग सीमित है, उनके उचित तथा बुद्धिमता पूर्ण उपयोग से छात्र/ छात्राओं को लाभान्वित करना शोध का औचित्य है। हाई स्कूल स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा जो हम विद्यार्थियों को दे रहे है उसे वे किस सीमा तक ग्रहण कर पाते हैं। पर्यावरण शिक्षा से छात्र–छात्राओं की प्रवृत्तियों, आदतों, विचारों, कौशलों, अभिवृत्तियों, रुचियों और व्यवहार में क्या और कितना परिवर्तन हो रहा है तथा समग्र शिक्षा पर इसका प्रभाव किस सीमा तक वांछित दिशा में हो रहा है। यदि किसी प्रकार की रुकावट है तो क्यो? यह रुकावट किस प्रकार दूर की जा सकती है? एवं भविष्य में क्या परिवर्तन किया जाय कि लक्ष्य की प्राप्ति हो सकें।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

पर्यावरण भौतिक वातावरण का द्योतक है। आजकल के यान्त्रिक और औद्योगिक युग में इसको प्रदूषण से बचाना अनिवार्य है। सामान्य जीवन प्रक्रिया में जब अवरोध होता है तब पर्यावरण की समस्या जन्म लेती है। यह अवरोध प्रकृति के कुछ तत्वों के अपनी मौलिक अवस्था में न रहने और विकृत हो जाने से प्रकट होता है। इन तत्वों में प्रमुख हैं जल वायु, मिट्टी आदि।

वर्तमान समय में मनुष्य औद्योगिकीकरण और नगरीकरण में इस तरह से गुम हो चुका है कि वह स्वार्थपूर्ति के लिए प्रकृति का अत्यधिक दोहन करने लगा है और पर्यावरण को असंतुलित बनाए हुए है। परिणामस्वरुप मनुष्य को प्रदूषण, बाढ़, सूखा आदि आपदाओं का सामना करना पड़ता है। यदि मनुष्य प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य तत्वों की श्रृंखला का सुरक्षित तरीके से उपभोग करे तो पर्यावारण को संरक्षित रखा जा सकता है।

विश्व के सभी देशों का दायित्व है कि वे वैज्ञानिकों द्वारा दी गई, चेतावनियों को ध्यान रखते हुए नीतियाँ बनाए एवं विश्व कल्याण हेतु सर्वमान्य समझौतों को क्रियान्वित करवाए। संपोषणीय विकास की चुनौती अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा है। वन्य जीव संरक्षण को भी संपोषणीय विकास की राजनैतिक धारणा के संदर्भ में रखा जाता है। जल संरक्षण हेतु नीति निर्धारण व क्रियान्वयन आवश्यक है। जल संरक्षण एक बड़ी चुनौती है। गरीबी, पिछड़ापन, स्वास्थ्य आदि जैसे पक्ष भी संपोषणीय विकास व राजनैतिक धारणा से सम्बन्धित चुनौतियाँ हैं। पर्यावरण शिक्षा द्वारा आम जन में संपोषणीय विकास की चेतना जागृत करना एवं सन्तुलन का महत्व समझाना अत्यन्त आवश्यक है।

उद्देश्य

शोध समस्याओं के समाधान की दिशा में शैक्षिक अनुसंधान के लिए कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं, जिनको प्राप्त करने की दिशा में शोध उन्मुख होता है। पर्यावरण शिक्षा द्वारा जनजातीय छात्र की मानसिक, शारीरिक चेतना का विकास करना। छात्रों की प्राकृतिक पर्यावरण की प्रेरणा देना।

परिसीमांकन

डिण्डोरी जिला अपनी गौरव जनजातीय संस्कृति वैभव खनिज सम्पदा और भौगोलिक स्थिति तथा बैगा जनजाति के कारण जाना जाता है। इसमें कुल 7 विकासखण्ड – डिण्डोरी, अमरपुर, समनापुर, बजाग, शहपुरा एवं मेंहदवानी हैं। डिण्डोरी जिले में जनजातीय साक्षरता 14.2 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 22.14 तथा महिला साक्षरता 5.43 प्रतिशत है। जिले में कुल 38 हाई स्कूल है जिनमें अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की कुल संख्या 5873 है। जिले से कुल 28 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विघि द्वारा अध्ययन हेतु किया गया।

न्यादर्श

शोध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित पर्यावरण जागरुकता के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 56 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, जिला शिक्षा अधिकारी, 2–2 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 280 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुमाश्रित परिपूर्ण होगा।

अध्ययन पद्धति

शोधार्थी का शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण मूलक अनुसंधान की श्रेणी में आता है। शोध कार्य के दौरान निम्न शोध विधियों एवं उपकरणों का समावेश किया गया है–

साक्षात्कार विधि

शोधार्थी ने अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित तथ्यों के विषय में गहन एवं विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करने हेतु अनेक व्यक्तियों से साक्षात्कार किया है। शोध क्षेत्र डिण्डोरी जिले के हाई स्कूल स्तर के जनजातीय छात्रों में पर्यावरणीय शिक्षा का जागरुकता अध्ययन करने के लिए छात्र, शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावक से इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन, परिणाम व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया।

चयनित विधियों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. साक्षात्कार पत्रक
2. प्रश्नावली

शोध क्षेत्र से संबंधित पूर्व में किये गये कार्यो की संक्षिप्त समीक्षा

किसी भी अध्ययन कार्य को करने से पहले उस विषय से संबंधित पूर्व विद्वानों के कार्यो का अवलोकन उससे संबंधित साहित्य के अध्ययन से अध्ययन कार्य में सहायता मिलती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने अपने सीमित प्रयासों से नजदीकी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में भ्रमण किया तथा विषय से संबंधित पूर्व में किए गए अनुसंधानों का अध्ययन किया, जो निम्नानुसार है– गर्ग, रूप किशोर और प्रकाश तातेड (1988); जरीना और अब्दुल समद (2013); कपिल, एच.के. (1996); पारकर, डी.सी. (1974); पुरोहित, श्याम सुन्दर (1991) एवं रोली (1995) ने जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन किया।

शोध क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

जिले की भौगोलिक स्थिति $22^0 17'$ से $23^0 17'$ उत्तरी अक्षांश एवं $80^0 41'$ से $81^0 41'$ पूर्वी देशान्तरों के मध्य निहित है। समुद्र सतह से इसकी ऊँचाई अधिकतम 1100 मीटर एवं न्यूनतम ऊँचाई 885 मीटर

है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 6128 वर्ग किलोमीटर है। मध्यप्रदेश के दक्षिण–पश्चिम भाग में यह जिला स्थिति है, जिसकी सीमाएँ उत्तर में उमरिया और शहडोल जिले से, पश्चिम में छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर और राजनांदगाँव जिले से, दक्षिण सीमा बालाघाट और मंडला जिलों से तथा पूर्वी भाग में जबलपुर जिलों से लगी हुई है। डिण्डोरी जिले में दो तहसीलें हैं– शहपुरा और डिण्डोरी। इन दोनों तहसीलों में कुल सात विकासखण्ड हैं, दो विकासखण्ड – शहपुरा और मेंहदवानी शहपरुा तहसील के अन्तर्गत आते है तथा शेष पाँच विकासखण्ड – डिण्डोरी, अमरपुर, समनापुर, बजाग और करंजिया, डिण्डोरी तहसील के अन्तर्गत आते हैं।

प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र में संकलित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार हैं–

सारणी 1: हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन (प्राचार्य साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित प्राचार्यों की संख्या	हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है		सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	डिण्डोरी	04	04	100.00	00	00
2.	अमरपुर	04	03	75.00	01	25.00
3.	करनजिंया	04	03	75.00	01	25.00
4.	समनापुर	04	03	75.00	01	25.00
5.	बजाग	04	03	75.00	01	25.00
6.	शहपुरा	04	03	75.00	01	25.00
7.	मेंहदवानी	04	03	75.00	01	25.00
योग		28	22	78.57	6	21.43

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक 1 में शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता से संबंधित ज्ञान की जानकारी का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में पर्यावरण जागरुकता से संबंधित ज्ञान की जानकारी के बारे में हाईस्कूल स्तर के 28 प्राचार्यों से साक्षात्कार के माध्यम से प्रश्न पूछे गये। डिण्डोरी विकासखण्ड में शत–प्रतिशत और शेष सभी विकासखण्डों में 75.00 प्रतिशत प्राचार्यो का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। डिण्डोरी विकासखण्ड में निरंक और शेष सभी विकासखण्डों में 25.00 प्रतिशत प्राचार्यो का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है। शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित 28 प्राचार्यों में से 78.57 प्रतिशत इस मत से सहमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और 21.43 प्रतिशत इस मत से सहमत नही है।

सारणी 2: हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन (शिक्षक प्रश्नावली के आधार पर)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित शिक्षकों की संख्या	हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है		सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	डिण्डोरी	8	6	75.00	2	25.00
2.	अमरपुर	8	5	62.50	3	37.50
3.	करनजिंया	8	5	62.50	3	37.50
4.	समनापुर	8	6	75.00	2	25.00
5.	बजाग	8	4	50.00	4	50.00
6.	शहपुरा	8	4	50.00	4	50.00
7.	मेंहदवानी	8	5	62.50	3	37.50
योग		56	35	62.50	21	37.50

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक 2 में शोध क्षेत्र के डिण्डोरी और समनापुर विकासखण्ड में 75.00 प्रतिशत, अमरपुर, करनजिंया और मेंहदवानी विकासखण्ड में 62.50 प्रतिशत तथा बजाग और शहपुर विकासखण्ड में 50.00 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। बजाग और शहपुर विकासखण्ड में 50.00 प्रतिशत एवं अमरपुर, करनजिंया और मेंहदवानी विकासखण्ड में 37.50 प्रतिशत तथा डिण्डोरी और समनापुर विकासखण्ड में 25.00 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है।

सारणी 3: हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन (अभिभावक प्रश्नावली एवं साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित अभिभावकों की संख्या	हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है		सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	डिण्डोरी	8	6	75.00	2	25.00
2.	अमरपुर	8	4	50.00	4	50.00
3.	करनजिंया	8	4	50.00	4	50.00
4.	समनापुर	8	6	75.00	2	25.00
5.	बजाग	8	4	50.00	4	50.00
6.	शहपुरा	8	4	50.00	4	50.00
7.	मेंहदवानी	8	5	62.50	3	37.50
योग		56	33	58.93	23	41.07

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक 3 में शोध क्षेत्र के डिण्डोरी और समनापुर विकासखण्ड में 75.00 प्रतिशत, मेंहदवानी विकासखण्ड में 62.50 प्रतिशत तथा अमरपुर, करनजिंया, बजाग और शहपुर विकासखण्ड में 50.00 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अमरपुर, करनजिंया, बजाग और शहपुर विकासखण्ड में 50.00 प्रतिशत एवं मेंहदवानी विकासखण्ड में 37.50 प्रतिशत तथा डिण्डोरी और समनापुर विकासखण्ड में 25.00 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

अध्ययन क्षेत्र के डिण्डोरी जिले के 58.93 प्रतिशत अभिभावक इस मत से सहमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और 41.07 प्रतिशत इस मत से अभिभावक सहमत नही है।

सारणी 4: हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन (छात्र प्रश्नावली पत्रक के आधार पर)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित छात्रों की संख्या	हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है		सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	डिण्डोरी	40	30	75.00	10	25.00
2.	अमरपुर	40	35	87.50	5	12.50
3.	करनजिंया	40	35	87.50	5	12.50
4.	समनापुर	40	32	80.00	8	20.00
5.	बजाग	40	33	82.50	7	17.50
6.	शहपुरा	40	35	87.50	5	12.50
7.	मेंहदवानी	40	33	82.50	7	17.50
योग		280	233	83.21	47	16.79

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 4 में शोध क्षेत्र के हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणी जागरुकता से संबंधित ज्ञान की जानकारी चयनित स्कूलों से 10–10 छात्रों के प्रश्नावली माध्यम से प्रश्न पूछे गये है। अमरपुर, करनजिंया और शहपुरा विकासखण्ड में 87.50 प्रतिशत, बजाग और मेंहदवानी विकासखण्ड में 82.50 प्रतिशत, समनापुर विकासखण्ड में 80.00 प्रतिशत तथा डिण्डोरी विकासखण्ड में 75.00 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। डिण्डोरी विकासखण्ड में 25.00 प्रतिशत, समनापुर विकासखण्ड में 20.00 प्रतिशत, बजाग और मेंहदवानी विकासखण्ड में 17.50 प्रतिशत, तथा अमरपुर, करनजिंया और शहपुरा विकासखण्ड में 12.50 प्रतिशत, छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है

अध्ययन क्षेत्र डिण्डोरी जिले में छात्रों का 83.21 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और 16.79 प्रतिशत का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है।

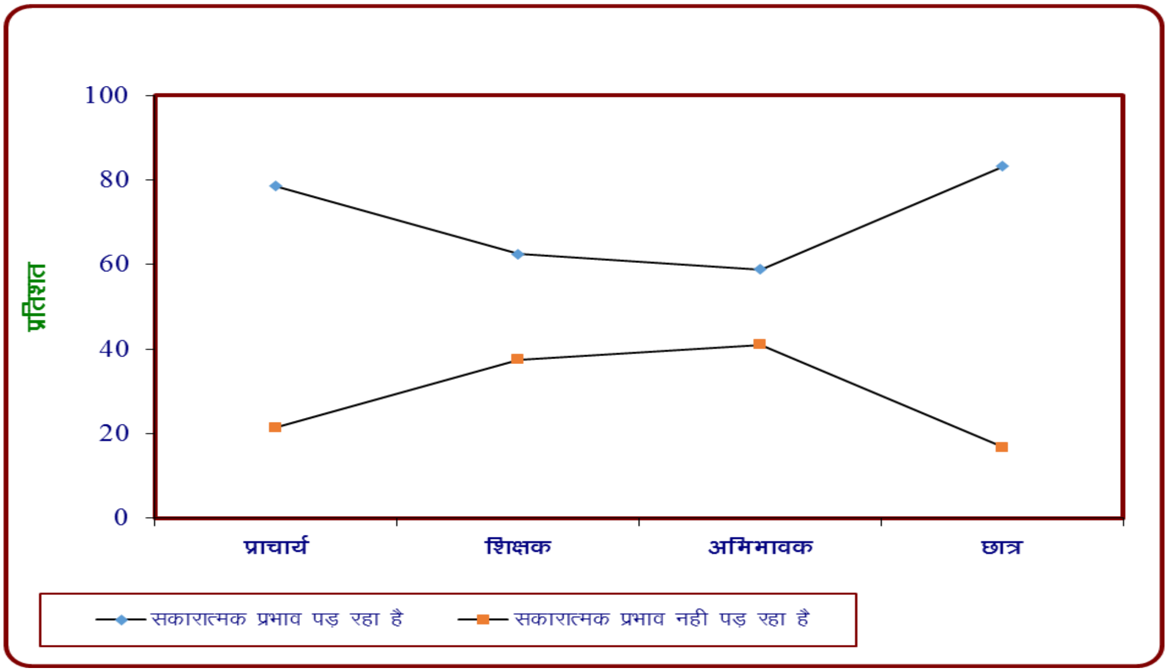

आरेख 1: हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन

शोध क्षेत्र के 78.57 प्रतिशत प्राचार्य, 62.50 प्रतिशत शिक्षक, 58.93 प्रतिशत अभिभावक व 83.21 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

निष्कर्ष

1. शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित 28 प्राचार्यों में से 78.57 प्रतिशत इस मत से सहमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और 21.43 प्रतिशत इस मत से सहमत नही है। (सारणी क्र. 1)
2. जिले के 62.50 प्रतिशत शिक्षक इस मत से सहमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और 37.50 प्रतिशत शिक्षकों का मत है कि हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है। (सारणी क्र. 2)
3. अध्ययन क्षेत्र के डिण्डोरी जिले के 58.93 प्रतिशत अभिभावक इस मत से सहमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और 41.07 प्रतिशत इस मत से अभिभावक सहमत नही है। (सारणी क्र. 3)
4. अध्ययन क्षेत्र डिण्डोरी जिले में छात्रों का 83.21 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और 16.79 प्रतिशत का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत जनजातीय छात्रों के पर्यावरणीय जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है। (सारणी क्र. 4)

सुझाव

1. जनजातीय छात्रों में सैद्धान्तिक ज्ञान को प्रोजेक्ट कार्य एवं प्रायोगिक कार्यो द्वारा छात्रों के मस्तिश्क में पहुंचाना चाहिये ताकि उनमे वैज्ञानिक धारणा का विकास हो सके।
2. जनजातीय छात्रों की आवश्यकता एवं पाठ्यक्रम के अनुसार समय–समय पर पर्यावरण शिक्षा के बारे में शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक, पर्यावरणीय प्रदूशण एवं संरक्षण की नवीन गतिविधियों से परिचित हो सके।
3. जनजातीय छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कर उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरुक तथा पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने के कारणों से अवगत कराने हेतु क्षेत्रीय जलवायु, भूमि, वन सम्पदा, नदियों तथा पर्यावरण को प्रदूशित करने वाले कारको पर आधारित ज्ञान प्रदान करना चाहियें।

सन्दर्भ

1. गर्ग, रूप किशोर और प्रकाश तातेड़, पर्यावरण शिक्षा, उदयपुर (भारत) : पर्यावरण सामुदायिक केन्द्र, 1988, पृष्ठ 36.
2. जरीना और अब्दुल समद (2013) सेकेंडरी स्कूल में विज्ञान के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता पर पर्यावरण विशेषज्ञों के सर्वेक्षण का अध्ययन।
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. पारकर, डी.सी. (1974). एन एनालिसिस आफ एन्वायरनमेन्टल एटीट्यूड्स एज मेजर्ड बाई ए मोडिफाइड सीमेंटिक डिफरेन्शियल इन्सट्रूमेन्ट. डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, 35, 7142ए.
5. पुरोहित, श्याम सुन्दर, पर्यावरण शिक्षा (द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण), बीकानेर (भारत) : अजन्ता बुक्स, 1991. पृष्ठ 64
6. रोली, एस. (1995) जबलपुर जिले में पर्यावरण शिक्षा की दिशा में हाई स्कूल के शिक्षकों की जागरूकता की दृष्टिकोण की जाँच का अध्ययन।